॥ श्रीः ॥

कल्याणकविरचित

सुगमरागमाला ।

यह ग्रंथ

भालचंद्रशर्माने

आर्यभूषण यंत्रालयमें छपवाकर प्रसिद्ध किया है.

शकः १८४० सन् १९१८

सूचना.

ह्या ग्रंथाची हस्तलिखित प्रत श्रीकाशीसंगीतसमाजाचे आ० सेक्रेटरी श्री० जगन्नाथवर्मा यांजकडून आम्हांस मिळाली. त्याबद्दल आम्ही त्यांचे फार आभारी आहों.

प्रकाशक.

Printed at the Arya-Bhushan Press, Poona, City,
by Anant Vinayak Patvardhan,
AND
Published by Bhalchandra Sitaram Sukthankar, M. A., L. L. B.,
at 2 Malabar Hill, Bombay.

॥ श्रीः ॥

सुगमरागमाला.

श्रीगणेशाय नमः

अथ षर्जादिसप्तस्वरसंज्ञ्या प्रथममंडलं लिख्यते ।

दोहा.

षर्ज रिषभ गंधार पुनि मध्यम पंचम जान ।
धैवत बहुरि निषाद स्वर सातो कहे वपान ॥ १ ॥
खर कुंजर हय कोकिला काक केकि अरु भेक ।
इनके स्वरके अंशतें प्रकट भये इक एक ॥ २ ॥
सा रि ग म प ध नि स्वरनंकी भार्या नटी सरूप ।
साधन मुख तंत्रन समा नाच हि नाच अनूप ॥ ३ ॥
कोप भेद गामि अलग औा लाग डांट धिर मान । (?)
उर्प तुर्प गुरु सुर्प लघु करत संगीत वपान ॥ ४ ॥
इत्यादिक स्वर भेद है गावत सुघर विचार ।
ए सर्व गति आलापमें लेति चुतुर स्वर नारी ॥ ५ ॥

अथ आलाप विधी ।

तनरी ईनाता नरी ईननऊ आ नाम ।
बाइस स्वरति सुन लेहु अवगुनहु तीन विधी ग्राम ॥ ६ ॥

इति प्रथममंडलखंडः ।

अथ श्रुतिविधानद्वितीयखंडः ।

चारि स्वरतिहैं खर्जकी तीन रिषभकी आंही ।
द्वै गंधारकी चारीहैं मध्यम स्वरके मांही ॥ ७ ॥

चारि बहुरि पंचम वसै धैवट तीन बषान ।
द्वै निषादमैं बसतहै बाईसोई जान ॥ ८ ॥

अथ षर्जादि सप्तस्वरस्य द्वाविंशति स्वरतिनाम वर्णनं ।

दीताईता मृद्धि औ मध्या नाम हि जान ।
चारि स्वरति ए पर्जके कहे कल्यान बखान ॥ ९ ॥
वीना और नवीन पुनि कहि वानि प्रवीन ।
नाद सप्तसति कामते रिषभ स्वरति ए तीन ॥ १० ॥
एसी मुनी द्वितीय पुनी नाम मोहिनी आहि ।
दोई स्वरति गंधारकी जानत कोविद ताहि ॥ ११ ॥
नाम कोमला कोकिला शुक्ला मंगल रूप ।
मध्यम स्वरति चारि ए उपजी परम अनूप ॥ १२ ॥
अंगा बहुरि तरंग पुनि सुनो सुरंगा नाम ।
और त्रिभंगा चौथी है पंचम स्वरति ललाम ॥ १३ ॥
गुप्ता इक लुप्ता द्वितिय तृतिय प्रक्षिप्ता संग ।
धैवत श्रुति प्रत वरणिन कहत बढत सुरंग ॥ १४ ॥
भृंगी बहुरि अभगी है स्वरति निषादकी दोय ।
बाईसो ए जानिकै गावै गुनी जु होय ॥ १५ ॥

इति बाईसस्वरश्रुतिनाम द्वितीयखंडः ।

अथ ग्रामनाम.

उदरा द्विक मुद्रा बहुरि तारातीजा नाम ।
बरनत हौं आगे सुनो यकयकहको विश्राम ॥ १६ ॥
उदरा उपजै उदरतें मुद्रा कंठ स्थान ।
तारा होय कपालतें बरनत नाद पुरान ॥ १७ ॥

इति तृतीयग्रामनामवर्णन तृतीयखंडः ।

अथ एकविंशन्मूर्छना स्थान नाम ।

मूर्छना तंहं बसत है जहं स्वरको विश्राम ।
तीन तीन स्वर प्रति रहैं अब बरनौं सब नाम ॥ १८ ॥

अथ षर्जादि सप्तस्वर मूर्छना नाम कथनं ।

आमोदनी विनोदनी औं प्रमोदनी नाम ।
षर्जे मूर्छना तीन ए उपजत स्वर विश्राम ॥ १९ ॥
दीर्घा यक शीघ्रा द्वितिय व्यंगी तृतिय बखान ।
कहत मूर्छना रिषभकी लेहु सयाने जानि ॥ २० ॥
है आनंदि प्रलापि पुनि आलापी सुखधाम ।
उपजत हैं गंधारतें तीन मूर्छना नाम ॥ २१ ॥
विश्रामिनी अरु कामिनी आरामिनी अनूप ।
मध्यमतें प्रगटत सदा तीन मूर्छना नाम ॥ २२ ॥
और कोमलीनिर्मली जनली नाम ललाम ।
पंचमकी ए मूर्छना नित्या परम सुवाम ॥ २३ ॥
आधारिनी विहारिनी विस्तारिनी विचारी ।
धैवट स्वरकी मूर्छना कहत प्रचारि प्रचारि ॥ २४ ॥
लज्जा संकोची बहुरि गोपी कही बषानी ।
रसिक कल्याण पुराण तत स्वर निषादकी जानि ॥ २५ ॥

इति चतुर्थखंडः ।

अथ दशदोषविभागकथनं ।

तानहीन रसहीन अरु तालहीन स्वर काग ।
बदन भौंह वांकी किये गावै द्रुतगति त्याग ॥ २६ ॥
पुनि कपालस्वर व्यंगस्वर अर्थ न जानै जोई ।
अरु स्वर भेद न लखै सुनी तासो अघ दुख होई ॥ २७ ॥

ए दश दोष विचारिकै वरणे सहित विभाग ।
सप्तविंश गुण अब कहौ सुनी बाढै अनुराग ॥ २८ ॥

इति पंचमखंडः ।

अथ रागस्य सप्तविंशगुणविभागकथनं ॥

श्रद्धा औ अभिलाष पुनि सुमाति रूप रस ज्ञान ।
दया मैत्रि औ प्रेम सुख तोष चाह परमान ॥ २९ ॥
नीति विनीत प्रतीत पुनि बुद्धि द्रवत्व विवेक ।
निश्चै भक्ति संयोग पुनि परिचै भोग अनेक ॥ ३० ॥
शुद्धि बुद्धि श्रोता रसिक सुन विचारि सहेत ।
मन प्रसन्न आनंदयुत एते गुणानि समेत ॥ ३१ ॥

इति षष्ठखंडः ।

अथ रागश्रोताल्लक्षणं ।

रागश्रोता तीनहै उत्तम मध्यम नीच ।
ते वरने बहुभाति है रागग्रंथके बीच ॥ ३२ ॥

अथ उत्तमरागश्रोतालक्षणं ।

सभामध्य प्रभु बैठिकै उचित सबैं बैठारि ।
पान सुगंध समै उचित हित सनमान सुधारि ॥ ३३ ॥
निज समान जन रुखलिये बोलै वचन विवेक ।
इष्ट मित्रसो सूचना करै खुसी यक एक ॥ ३४ ॥
घडी चार द्वै बैठिके व्है प्रसन्न सुनि राग ।
कछु गुनी प्रसन्न करी बहुत न बैठे लाग ॥ ३५ ॥
निजसमान निज धान धारि काहु मिषतैं जाय ।
रागरंग होवै सरस मै आवत हौ भाय ॥ ३६ ॥

उठत कहै सुनिए सबै साहेब सरसुजान ।
व्है सब सभा प्रसन्न तब सुनै राग सुख मान ॥ ३७ ॥
राग होय परिपूर्ण जब तबै गुणिको फेरि ।
जो करार सो देय अरु कछु इनाम पुनि देहि ॥ ३८ ॥

अथ मध्यमश्रोता लक्षणकथनं ।

सभा सहित बैठे सुनै सहित विलास विवेक ।
दान मान सुख करि गुनी विदाकरै यक एक ॥ ३९ ॥

अथ नीचश्रोता लक्षणकथनं ।

गुनी राग सुनि गाव हि सभा मध्य न विचार ।
हसै कोऊ कोऊ लरै कोऊ देय निकार ॥ ४० ॥

अथ त्रिविधगुनी लक्षणकथनं ।

गायक तीन प्रकारहै उत्तम मध्यम नीच ।
अपर दोष गुन रहित गुनियन इनके बीच ॥ ४१ ॥
उत्तम सबविधि पूर्ण है मध्यम कछु विधि हीन ।
कछु जानै बहु नाहिजो नीच कहे ए तीन ॥ ४२ ॥

इति सप्तमखंडः ।

अथ गुणीश्रोता लक्षणं ।

रसिक श्रोता तीन है त्रिगुण अंग आधिकार ।
जथा भाग गुनके सदा सुनत विचारी विसार ॥ ४३ ॥
सात्विक राजस तामसी जो उपचै संचार ।
ते वैरागि रसिक अरु विषई त्रिविध प्रकार ॥ ४४ ॥

अथ गुणनिरतश्रोता लक्षणं ।

प्रथम सत्वगुण ।

सब अक्षर व्यापक लखै श्यामा श्याम विलास ।
वृंदावन लीला सदा सुनि गावै सहुलास ॥ ४५ ॥

द्वितीय रजोगुण।

रस राजा ब्रज राजसे जुगल भाव प्रगटाय।
गावै सुनै सप्रेम नित इष्ट उपास्य सुभाय ॥ ४६ ॥

तृतीय तमोगुण।

उदरभरनकारन सुगति भक्ति विरक्त स्वरूप।
करै गाय सुनि गुणनयो प्रभु विश्वंभर रूप ॥ ४७ ॥

अथ त्रिगुणवैराग्यश्रोता लक्षणं।

प्रथम सत्वगुण।

काम क्रोध मोहादि तजि भजै निरंजन देव।
अद्वैत भाव गावै सुनै सत्व विरागी भेव ॥ ४८ ॥

अथ राजस।

राजनीति पालन करै मन उदास गृहमाहि।
वैकुंठनायक गुण गणै सुनै और कछु नाहि ॥ ४९ ॥

अथ तामस।

गोप्य रहस्य करै प्रगट वहिरंगिन जो होय।
गावै सुनै कहै सदा रसिक तामसी सोय ॥ ५० ॥

अथ त्रिगुणनिरत विषयईश्रोता लक्षणं।

वांछा पूरण हेत जो कहै सुनै हरिनाम।
सो सात्विक विषई भजै जन जो प्रभुहि सकाम ॥ ५१ ॥
धनमद जनमद रूपमद बलजोवनमद माति।
लोक प्रतिष्ठा हित सुनै गावै दिन औ राति ॥ ५२ ॥
विषय भोगजे ते करै हरिकृत साक्षी देहि।
निजकर्मनिमै सोइ गुन गावै पुनि सुनि लेहि ॥ ५३ ॥

अथ त्रिविधरागजातिवर्णनं।

त्रिधा त्रिधा प्रति गुणनके श्रोतृ सुप्र मंझारि।
कहे बरानि नव भाति अब कहौं राग विस्तारि ॥ ५४ ॥

तीन ही भातिको भेद है रागजातिमें आदि।
बरनौं सब विस्तारसों कृत्तिम प्राकृत बादि ॥ ५५ ॥
प्रथम शुद्धसालंक है पुनि संकीरण लेहु।
याहमै जो भेद तिहि जानन मै मन देहु ॥ ५६ ॥
द्विविधि शुद्ध द्वैविधि बहुरि सालंकहुको जान।
द्विविधि भाव संकीरणहु अबसो कहौं बखान ॥ ५७ ॥

अथ द्विविध शुद्धजाति भेदवर्णनं।

एक शुद्ध दूजो तथा महाशुद्ध स्वर जाति।
ताको भेद कहौं बरणि है दोऊ जिहि जाति ॥ ५८ ॥

अथ प्रथमशुद्धजाति लक्षणं।

प्रतिरूपहू औ रंग जहं विषय संग नहिं होई।
कोउक स्वर विकृति हि मिलै शुद्ध जाति है सोई ॥ ५९ ॥
विकृति कहत है ताहिजो और गैरसो होइ।
वाहिके अस्थानमैं दुरिदुरि मिलि मिलि जाइ ॥ ६० ॥
पाने स्वर सालंकते गुप्त प्रगट को भेद।
गावहु चतुर विचारिकै स्वरतिमिल विच्छेद ॥ ६१ ॥
शुद्ध गूजरी आदि है टोडी शुद्धहु शुद्ध।
सही त्यागी गावै सुनै उपजै भाव विरुद्ध ॥ ६२ ॥

द्वितीय शुद्धजाति लक्षणं।

मिलै न विकृति स्वर सुरति पूर्ण आपनी होय।
जिमि सारंग अरु कान्हरा महाशुद्ध गुण सोय ॥ ६३ ॥

अथ कान्हरादि सप्तराग शुद्ध महाशुद्ध लक्षण वर्णनं।

संपूरणहै चारि ए सप्तरागिनी माहि।
टोडी गौरी गुजरी औ कान्हरा कहाहि ॥ ६४ ॥
नट मलार सारंग एक हौ शुद्ध है तीन।
ओडव षाडव नाम कहि गावत गुनी प्रवीन ॥ ६५ ॥

अथ द्विविध सालंक लक्षणं ।

सालंकहु द्वै भाति है बरनत ताहि निःशंक ।
स्वरसालंक प्रथम है दुतिय राग सालंक ॥ ६६ ॥
स्वरसालंकहि शुद्ध मैं गनत सयाने लोग ।
जामैं प्रगट मिलै सदा विकृति स्वर संयोग ॥ ६७ ॥

अथ रागसालंक लक्षणं ।

औररंग छाया मिलै और ठौर हू आन ।
ताहि रागसालंक कहि बरनत नाद पुरान ॥ ६८ ॥
श्रीराग जैसे सदा है गौरीके रंग ।
ऐसहि दीपक रागहै और रंगके संग ॥ ६९ ॥

अथ श्रीरागादि चतुर्दश सालंक नाम ॥

सुनहु चतुर्दश नाम अब जे सालंक कहा हि ।
कहाँ रंग जे जे मिलै जिन जिन राग निमांहि ॥ ७० ॥
श्रीराग गौरी बरण दीपक भीमपलासि ।
मेघ मलार बरण सबै कहै प्रवीन विलासि ॥ ७१ ॥
छमे तीन सालंक है संकीरण है तीन ।
सो आगे कहिहैं बरण पि (?) है चतुर प्रवीन ॥ ७२ ॥
सुनहु बहुरि सालंकके है जुरागिनी नाम ।
बरणौ बिवरण बरणहै सुमिरि मनहि पद श्याम ॥ ७३ ॥
विभास ललितके रंगहै ललितहि रंग वसंत ।
सोरट केदार बरण सूहो बुध भाषंत ॥ ७४ ॥
धनासिरी सूहो होऊ भैरव बरण कहाहि ।
काफी और बिलावलहि रंग कान्हरा आहि ॥ ७५ ॥
गौरी गोड बरन कहै रेवा गुजरी रंग ।
देश कालकी रंगहै बराटी सो अंग ॥ ७६ ॥

विपसंकीरण

अथ द्विविध संकीरण लक्षणं ।

लघुसंकीरण एकहै महासंकीरण एक ।
ताहि बुझी गावत सुघर गुनि समेत विवेक ॥ ७७ ॥

अथ लघुसंकीरण लक्षणं ।

जाहि शुद्ध द्वै मिलै सो लघु संकीरण आहि ।
जो मिली टोडी कान्हरा भैरव राग कहाहि ॥ ७८ ॥

अथ भैरवादि पंच नाम ।

भैरव टोडी कन्हरा मिलै कहावत राग ।
मिलि गौरी औ कन्हरा कन्हरगौड सुहाग ॥ ७९ ॥
मिलि केदारा कान्हरा नाम होत सावंत ।
सारंग और मल्लार मिलि कह सावंत गुणवंत ॥ ८० ॥
मल्रुहान कान्हरा मिलि गौरि और मलार ।
महासंकीरण अब सुनो सुरसादिक विस्तार ॥ ८१ ॥

अथ षट्‌विध महासंकीरण वर्णनं ।

महासंकीरण अब सुनो षट्‌विधि कहाँ बषानि ।
द्वै द्वै विधि इक ठौरके नाम धरनो पहिचानि ॥ ८२ ॥
द्वै सुरसा द्वै सारसा द्वै सरसा ए तीन ।
जमल भाव लोचन यथा छुपो रहै स्वर लीन ॥ ८३ ॥

अथ लघुसुरसा ।

मिले शुद्ध सालंकके राग कहावत जोड ।
लघुसुरसा संकीर्ण तिहि कहै पुराने लोक ॥ ८४ ॥

अथ लघुसुरसा अडानादि पंच नाम ।

मिले कान्हरा सोरटी नाम अडाना होई ।
मिलि गौरी अरु गुजरी नाम पूरबी सोई ॥ ८५ ॥

टोडी और धनासिरी मिलत क्‌ऽरी नाम ।
सारंग गौरा संगहैं गौरसारंगी नाम ॥ ८६ ॥
मिल रेवा औ गूजरी नाम सुरेव होइ ।
गुरुसुरसा इकवीस जो अब बरनौं हौं सोई ॥ ८७ ॥

अथ गुरुसुरसा भैरवादि एकवीस नाम ।

होत भैरवी मिलत हि टोडी और वरारि ।
रामकली मिल देशि औ गुजरी कहि विचारि ॥ ८८ ॥
फेर गुजरि मालवी मिलि गुणकली होइ ।
श्याम बरारी संगतें श्यामबरारी सोई ॥ ८९ ॥
गौंडमलारी होत है मिलि संग गौंडमलार ।
मिलि धनासिरी कान्हरा रिषभ नाम प्रकार ॥ ९० ॥
नाट कान्हराके मिले कान्हरनाट स्वरूप ।
गौरी औ षट रागतें देशी बनी अनूप ॥ ९१ ॥
टोडी देशीके मिले देसीटोडी होइ ।
मिलि टोडी औ पूरिया टोडीपूरिया सोइ ॥ ९२ ॥
है भषावरी रागनी मिलि टोडी बंगाल ।
सारंग बिलावल मिलते होय पुरैया बाल ॥ ९३ ॥
द्वै प्रदीपकी मिलतही सिरी राग सारंग ।
चैति कहिए गौरि औ जैत सिरीके रंग ॥ ९४ ॥
होय पूरिया कान्हरा कहिय सहाना साथ ।
मिलि फरदुस्तीकानरा कहिये सहाना गाथ ॥ ९५ ॥
संग इमन केदारके होय इमनकेदार ।
मिलि केदार कल्यान सो केदारकल्यान विचार ॥ ९६ ॥
मारू केदार मिलै सो बिहागरा नाम ।
सारंग और पूरवी मिले देवगिरीसी नाम ॥ ९७ ॥
सारंग औ नटके मिले सारंगनाट सरूप ।
गाव गुनी विचारी कै सुनत सुघर नर भूप ॥ ९८ ॥

संग शुद्ध संकीर्ण जो होय रागिनी ख्यात ।
सोइ गुरुसुरसा बहुरि सुनो सारसा बात ॥ ९९ ॥

अथ लघुगुरु सारसा लक्षणं ।

मिलै जाहि सालंक द्वै प्रथम सारसा सोय ।
दुतियं मिलन सालंक औ संकीरणके होय ॥ १०० ॥

अथ लघुसारसा विषहरा नाम एक रागिनी कथनं ।

मिलिं श्रीराग धनासिरी नाम विषहरा होय ।
लघु सारसा बषानिये कहत पुराने लोय ॥ १०१ ॥

अथ गुरु सारसा कल्यानादि पंचदश नाम वर्णनं ।

मिलै धनाश्री जैतश्री नाम होत कल्यान ।
बिलावल औ कल्यानतें भूपाली पहिचान ॥ १०२ ॥
देसकार औ पूरवी मिलत मालवा होय ।
ललित बरारी संगतें कहि बसंत सब कोय ॥ १०३ ॥
पंचम ललित मिलापतें पंचमललित सरूप ।
धनासिरी भैरव मिलै मालसिरी सुअनूप ॥ १०४ ॥
मिल पूरिया धनासिरी सोइ प्रगटत नाम ।
केदार औ नाटतें केदारानट विश्राम ॥ १०५ ॥
मेघ मालश्रीके मिले मधुमाधवि अवतार ।
सोरट मारूतें भयो स्वर सिंधुराप्रकार ॥ १०६ ॥
मिलत बिलावल गौंडसे है कामोद सरूप ।
मिलि धनासिरी पूरिया भीमपलासि अनूप ॥ १०७ ॥
देसकार औ जैतश्री मिलि लीलावंती होय ।
विभास संकराभरणतें जैतसिरी है सोय ॥ १०८ ॥
सहाना और बिलावल मिलै सुकहा बषान ।
सुघराई है नाम अति सुघराईकी खान ॥ १०९ ॥

अथ लघुमारसा कौशिकादि त्रयत्रिंशन्नाम वर्णनं ।

यथा कहै संकीरण संग इक दुतिय तीन स्वर संग ।
चार पांचहूके मिले तवन कहै रस रंग ॥ ११० ॥
अजैपाल मिलि पूरिया प्रगटत कौशिक राग ।
रिषभ वरारीतें भयो धवलक नाम विभाग ॥ १११ ॥
मिल वसंत हिंडोल स्वर पंचम प्रगटो आइ ।
कौशिक औ मालव मिले मालकौश स्वर राइ ॥ ११२ ॥
श्याम और कल्यान मिलि श्यामपूरिया होय ।
रामकली भूपाली मिलि कहो रंभली सोय ॥ ११३ ॥
मारू और पहेलि संग मरुजपहेली होय ।
मिल असावरी पूरिया कहत नाम है सोय ॥ ११४ ॥
श्याम वरारी होतहै श्यामवरारी संग ।
मिलि विहागरा मालश्री पंचावती सुरंग ॥ ११५ ॥
अजैपाल औ धौलते कही पूरिया नारी ।
देवकली गंधारतें गोडहि कह्यो विचारि ॥ ११६ ॥
श्याम रागके मिलतही रामकली अरु श्याम ।
एक रूप है सिंधवी और सिंधुरा नाम ॥ ११७ ॥
भैरव और वरारि मिलि होय नाम वंगाल ।
रामकली वंगाल मिलि प्रगटत है भटियाल ॥ ११८ ॥
जैत सिरी कल्यानतें होत जैतकल्यान ।
श्याम और कल्यानतें वही नाम परमान ॥ ११९ ॥
मिलि कामोद कल्यानतें है कामोद कल्यान ।
इमन संग कल्यान मिलि सोइ कहत सुजान ॥ १२० ॥
रिषभ और गंधारतें अजैपाल सुनि लेहु ।
संग मिले बंगाल पट्राग शुद्ध कहि देहु ॥ १२१ ॥
छाया होइ हमीर अरु शुद्ध नाटको संग ।
छायानाट कहत सबै कवि कोविद रस रंग ॥ १२२ ॥

छायानाट दोऊ मिलत अहिरनाट है सोय ।
हमीर नाट वै सहि मिलि कामोदनाट सो होय ॥ १२३ ॥
मिलि संकराभरण औ शुद्ध पूरवी नाम ।
ककुभ रागिनी होइ जो मालकौशिकी नाम ॥ १२४ ॥
टंक धवलतें होत है स्वर सोहनी सरूप ।
लीलावती त्रिवन मिले संकोची रस रूप ॥ १२५ ॥
चैती और वसंत मिलि होत वसंती नाम ।
नट मलारके साथ मिली नटमलार सी नाम ॥ १२६ ॥

अथ गुरु सरसा हिंडोलादि चतुर्विंशति नाम वर्णनं ।

लीलावती ललित बहुरि भैरव मिलि हिंडोल ।
गौरी गुजरी मालवा संग मन ध्यान अमोल ॥ १२७ ॥
गौरी श्याम औ पूरिया मिलि छंदसिरी नाम ।
जैतसिरी नट शुद्धतें कहो सरसुती नाम ॥ १२८ ॥
जैजैवंती होई मिलि कन्हरगौर श्रीराग ।
रेवा पंचम बंगाल सो परज कह्यो सुहाग ॥ १२९ ॥
असावरी मिलि सिंधुरा टोडी और मलार ।
अजैपाल बंगाल औ ललित श्याम परकार ॥ १३० ॥
संग विलावल गौडसों सो विलावली नाम ।
मलार कान्हरा संकराभरण देशाख ललाम ॥ १३१ ॥
होई तीन कामोद सो मिलै याहि ए तीन ।
कान्हर अरु कामोद पुनि औ खटराग प्रवीन ॥ १३२ ॥
टंक होय श्रीराग औ भैरव कान्हर संग ।
देशकार गौरी ललित मिलत त्रिवन बहु रंग ॥ १३३ ॥
देशकार औ गुजरी पुनि कल्यान समेत ।
होइ अहिरी रागिनी अति रसरंग निकेत ॥ १३४ ॥

साहाना केदारा बहुरि इमन संग हंमीर ।
देवगिरी नट भैरवी संग अष्टी गंभीर ॥ १३५ ॥
मिलि कान्हरा धनासिरी इमन होई तिहि संग ।
होई नाम वागेसुरी सुनत बढै बहु रंग ॥ १३६ ॥
नट हिंदोल प्रदीपकी मिले मध्यमा नाम ।
और सुनो विस्तारसों जे जे है सुख धाम ॥ १३७ ॥
टोडि धनाश्री सिंधवी असावरी मिलि होइ ।
ताहीको गंधार कहि गावत है सब कोइ ॥ १३८ ॥
कहि कान्हरा सुघरई औ मलारके संग ।
सूहो नाम वपानिए जासु परम रस रंग ॥ १३९ ॥
देसकार पूरवी मिले गौरी और मलार ।
मारू रागिनी होति है जानत सब संसार ॥ १४० ॥
भैरव पंचम गुर्जरी बंगाली गंधार ।
मिले होत चौराष्टकी जानत सब संसार ॥ १४१ ॥
गंधार वरारी गूजरी असावरी अरु श्याम ।
मिले होत पटरागको नाम होइ रस धाम ॥ १४२ ॥
इत्यादिक वरनन किये यथा ग्रंथ मति राग ।
गावै सुनै विशुद्ध मति व्है हरिपद अनुराग ॥ १४३ ॥

अथ भेदविभागकथनं लिख्यंत ।

भैरवको ऋतु और दिन कहो मुहूरत काह ।
लक्षण जाति समय तथा स्थान कहो चित चाह ॥ १४४ ॥
ऐसेही मालकंसको कहो भेद मन मान ।
अरु हिंडोल दीपक कहो मेघ श्रीराग बखान ॥ १४५ ॥
निजसंकेत तबै मिलै कोविद कहै विचार ।
नहीं होय संकीर्णता आवै राग सुधार ॥ १४६ ॥
नीप प्रसूता है सुनो अब सब बधुन विभाग ।
गावै सुनै विशुद्ध मति व्है हरिपद अनुराग ॥ १४७ ॥

कही जो संख्या प्रथम ही तामें ए विख्यात ।
अपर नायकी भेद है ताहि ग्रंथकी वात ॥ १४८ ॥

अथ भैरवादि षट रागस्य वंशवर्णनं ।

भैरवादिके वंशको वरनत हौं अब नाम ।
जिहि जिहि स्वरके अंशतें प्रगटे छवी ललाम ॥ १४९ ॥
खर्जपुत्र भैरव भयो प्रथम राग बड भाइ ।
मालकौश पुनि रिषभतें उपज्यो सुरपुर आइ ॥ १५० ॥
पुनि गंधारके अंशते भयो हिंडोल सरूप ।
दीपक मध्यमसुं बनहै दुर्लभ परम अनूप ॥ १५१ ॥
पंचम सुत है मेघ श्रीराग पिताको नाम ।
धैवट आहि निषादको वांझ वदत सह वाम ॥ १५२ ॥
सा रि ग म प ध के गर्भतें जन्मे ये षट राग ।
तीय प्रसूता है सुनो अब सब बधुन विभाग ॥ १५३ ॥

अथ भैरवराग समाजसहितवर्णनं ।

भैरवकी है मध्यमा औ भैरवी वरारी ।
मधुमाधवी सिंधवी बहुरि बंगाली षट नारी ॥ १५४ ॥
षट षट सखि इक एककी तिनमें वर इक एक ।
षट जूथ पति नामजुत वरनौ सहित विवेक ॥ १५५ ॥
अष्टि सहित सूहो बहुरि रेवा औ भटियाल ।
रंभे लीलै षट सखी जूथ परम रसाल ॥ १५६ ॥
षट षट सुत प्रतिरागिनी वर ईक इक तिन मांहि ।
ते षट भ्राता वर वरनि कहौं नाम जे आहि ॥ १५७ ॥
धौल श्याम कौशिक अंजपाल शुद्ध सो राग ।
कन्हर नाट भैरव सुवन वरने सहित विभाग ॥ १५८ ॥

अथ मालकौश राग समाजसहित वर्णनं ।

टोडी मारु षंभावती ककुभ गुणकली गौरि ।
मालकौशकी नारि एक वसत रागकी गौरी ॥ १५९ ॥

श्याम पूरवी सुघरई लीलावती ललाम ।
गौरसारंग बिलावली औ पुरिया सो वाम ॥ १६० ॥
छाया शुद्ध हमीर केदारा सारंग जान ।
अहीर सहित पट नाट जुत इन नामनि पहिचान ॥ १६१ ॥
गंधार नाम वर सखा है सारंग सखी बरनाम ।
मालकौंश सह विदित है एकविंश रस धाम ॥ १६२ ॥

अथ हिंडोलरागसमाजसहितवर्णनं ।

रामकली देशाख पटमंजरी ललित सरूप ।
बिहागरा बिलावलसहित पट हिंडोलकी रूप ॥ १६३ ॥
त्रिवन पुरैया पूरवी औ प्रदीपकी नारी ।
देवगिरी चैती कहो पट जूथप बिचारी ॥ १६४ ॥
मन ध्यान मालवा सहाना कन्हरगौर कल्यान ।
है इमन कल्यान पट हिंडोल पुत्र पहिचान ॥ १६५ ॥
सखा ललित पंचम सहित हिंडोलहि कहै बखान ।
सखि बसंतीयुत सदा एकविंश ए जान ॥ १६६ ॥

अथ दीपक राग समाजसहितवर्णनं ।

देशी और कामोद नट काफी तहा बिचारी ।
केदारा औ कन्हरा पट दीपककी नारी ॥ १६७ ॥
मलरुहान कान्हरा अष्टि अहीरी नाम ।
चौराष्टकी असावरी पूरिया धनाश्री वाम ॥ १६८ ॥
एक इमन केदार औ पांच कल्यान बखान ।
केदार चैत कामोद कहि श्याम हमीरहि जान ॥ १६९ ॥
है खटराग सहित सखा दीपक राग समाज ।
भीमपलासी सखी जुत एकविंश सुख काज ॥ १७० ॥

अथ मेघ राग समाजसहितवर्णनं ।

टंक सोरठी गूजरी भूपाली मलारी ।
देसकार जुत वाम पट मेघ देत अकवारी ॥ १७१ ॥

देशी टोडी पूरिया असावरी श्याम बगरी ।
पूरिया टोडी जैतश्री स्मर पहेली नारी ॥ १७२ ॥
सामंत नाट अडान औ छाया पुनि भावत ।
छठम सिंधुरा मेघके ए पट सुत भावंत ॥ १७३ ॥
गौरा सखा सखी बहुरी नटमल्लारीसो नारी ।
मेघ सहित इकविंशहै रसिक कल्यान बिचारी ॥ १७४ ॥

अथ श्रीराग समाजसहितवर्णनं ।

मालसिरी करनाटि पुनि मारवि कही बिचारी ।
वसंत धनाश्री असावरी श्री रागकी नारी ॥ १७५ ॥
परज बिपहरा सरसुती नाट मल्लारी वाम ।
जैजैवंती औरहै फरदुस्ती पट नाम ॥ १७६ ॥
तिलककामोद अरु गौड है कामोदनाट अरु नाम ।
बागेश्वरी औ पूरिया कान्हर औ श्याम राम ॥ १७७ ॥
पंचम संकोचि सखा सखी सहित इकवीस ।
राजत है श्रीराग नित गावत देत असीस ॥ १७८ ॥

अथ राग प्रति मास दिन ऋतु त्रिगुण जाति
स्थान सहित दशमखंड लिख्यते ।

बहुरि भिन्न कहि कहत हों प्रति प्रति राग समाज ।
निसवासर प्रति जथा सब करत ठकुर ईराज ॥ १७९ ॥
सर्म सहित सब एक करि लिखि दिखरायो ताहि ।
सुघर सयाने चतुर जन लषत लहै सुख जाहि ॥ १८० ॥
निज समाज जुतराग सब नित नित आठो जाम ।
एक एक मिलि भोगवें भैरव आदि सुनाम ॥ १८१ ॥

आदि मातते मातलौं इक इक राज कराहि ।
आदि अंत माधि रैन दिन वहि समाज कहाहि ॥ १८२ ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराज मानसिंहजीके
हुकुमसे श्रीकल्याणकवी विरचित
सुगमरागमाला ग्रंथ समाप्तः । संवत् १८६१ ॥

1804

51—

1804

समाप्तम

अथ स्वर—स्वरातिचक्रं ।

स्वर	षर्ज	रिषभ	गंधार	मध्यम	पंचम	धैवट	निषाद
भेद्	४	३	२	४	४	३	२
अथ मित्र मित्र नाम कथन	दीमा आयता मृदु मध्या गुनी जानत है	वीना नवीन प्रवीन	मोभवी मोहनी	कोमला कोकिला शुक्रा मंगला	अंगा तरंगा सुरंगा त्रिभंगा	गुप्ता लुप्ता प्रक्षिप्ता	भृंगी अभंगी

अथ सप्तस्वरचक्रं ।

स्वर	षर्ज	रिषभ	गंधार	मध्यम	पंचम	धैवट	निषाद
प्रगटस्थान	मोर	कुंजर	हय	कोकिला	काक	केकि	भेक
विदित वर्ण	स	रि	ग	म	प	ध	नी

मुख ते तथा तंत्री कहिए बीन सारंगी तमूरा ।
सितार आदि बाजन जे ते तहा प्रगट जानिए ॥

अथ ग्रामभेदचक्रं ।

उद्रा	मद्रा	तारा
उद्र	कंठ	कपाल
१	१	१
अति मधुर बालक स्वर	अतिमिश्र यौवनस्थ उच्चस्वर	अतिमधुर वृद्ध स्वरवत् अत्युच्च.

अथ मूर्छनाचक्रं ।

षर्ज	गंधार	रिषभ	मध्यम	पंचम	धैवट	निषाद
आमोदिनी विनोदिनी प्रमोदिनी	आनंदी प्रलापि आलापी	दिधा शीघ्रा व्यंगी	विश्रामिनी कामिनी आगामिनी	कोमली निर्मली जमली	गांधारिनी विझरिनी	लज्जा संकोची गोपी.

अथ देशदोषचक्रं

तान-हीन	रस-हीन	नाल-हीन	काग-स्वर	वदन-वक्र	ओंह-वंक	कपाल-स्वर	व्यंग-स्वर	अर्थन-जान	स्वर-भेद
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

अथ श्रोताचक्रं ।

उत्तम	मध्यम	नीच
१	२	३
सतोगुनी	रजोगुनी	तमोगुनी
यावत लक्षण ग्रंथ सब हे		

अथ गुनीचक्रं ।

उत्तम	मध्यम	नीच
१	२	३
निपुण	समानगुण	गुणहीन
स्वर तालादि में		

अथ रागगुनचक्रं ।

श्रद्धा	१
अभिलाष	२
सुमति	३
रूपरस	४
ज्ञान	५
दया	६
मैत्री	७
प्रेम	८
सुख	९
तोष	१०
चाह	११
नीति	१२
विनय	१३
प्रतीति	१४
बुद्धि	१५
द्रवत्व	१६
विवेक	१७
निश्चै	१८
भाक	१९
संयोग	२०
शुद्धि	२१
उद्धि	२२
रसिक	२३
मनप्रसन्न	२४
परिचय	२५
आनंदयुत	२६
गुणसहित	२७

अथ षट्रागचक्रं ।

आसामी	भैरव	मालकोश	हिंडोल	दीपक	मेघ	श्री
ऋतु	हेमंत	शिशिर	वसंत	ग्रीष्म	पावस	सरद
दिन	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
मूर्ति	शिव	ब्रह्मा	विष्णु	अग्नी	इंद्र	चंद्र
लक्षण	धनद	धर्मद	सामद	ज्ञानद	सुख	प्रेमद
जाति	संकीर्ण	संकीर्ण	संकीर्ण	सालंक	सालंक	सालंक
समय	छगरीरात रहे	एक पहर दिन चढे	सब रात दिन	संध्यासमय	सब रात दिन	एक पहर दिन रहे
स्थान	कैलास	ब्रह्मलोक	वैकुंठ	तपोलोक	इंद्रलोक	चंद्रलोक

अथ भैरवरागचक्रं ।

भैरवराग	मध्यमा रागिनी	भैरवी रागिनी	वरारी रागिनी	मधुमाधवी रागिनी	सिंधवी रागिनी	बंगाली रागिनी
समय	द्वे प्रहर रात चढे	एक पहर दिन	दो पहर दिन निकट	डेरू पहर दिन चढे	डेरू पहर रात रहे	एक पहर राति रहे
छगरी रात	अष्टी सखी	सहि सखी	सूहो सखी	रेवा सखी	भटियाला सखी	रंभेली सखी
२ हे	डेरू पहर रात हिन चढे	डेरू पहर दिन रहे	दो घरी दिन चढे	छगरी दिन चढे	चार घरी रात रहे	दो पहर रात बीते
सोहनी सखी	धौलपुत्र	श्याम पुत्र	कौशिक पुत्र	अजैपाल पुत्र	शुद्ध पुत्र	कन्हरनाट पुत्र
समय	चार घटी दिन चढे	दो पहर दिन चढे	दिन	सब रात	सदा	रातभर
एक घटि रात बीते						
रिखभा						
एक घरी रात बीते						

अथ मालकंशरागचक्रं ।

मालकंश राग पहर दिन रहे सो पहर राति तक सारंग सखी पहर दिनसे तीन पहर तक सखा गंधार दो घरी रात रही	टोडी रा- गिनी पहर दिन- सो पहर दिन रहे तक श्याम पू- रवी सखी एक घरी रात बीते छाया नाट- पुत्र ५घरी रात बीते	मा रागिनी दो पहर रात बीते सो पहर दिन सुघरई सखी ५ घटी रात बीते शुद्ध नाट पुत्र पहर रात के बीते	पभावत रागिनी डेरू पहर राती बीते लीलावती सखी डेरू पहर दिन चढे हमीर नाट- पुत्र डेरू पहर रात बीते	ककुभ रा- गिनी दो पहर रात गोर सारंग सखी दो पहर दि- न बीते केदार नाट पुत्र डेरू पहर रात बीते	गुणकरी रागिनी पहर दिन चडे बिलावल सखी सारे दिन सारंग नाट- पुत्र डेरू पहर रात बीते	गौरी रागिनी संध्या समय पूरिया सखी सब रात अहीर नाट पुत्र संपूर्ण रात

अथ हिंडोलरागचक्रं ।

हिंडोल राग समय दिन रात वसंत सखी दिनभर ललित पंचम सखा निशते समय	रामकली रागिनी प्रातसमे त्रिवनसखी तीन पहर दिन मनध्यान पुत्र चार पहर दिन	देसाख रागिनी सब रात दिन पुरैयासखी चौथे पहर दिन मालवीपुत्र दो पहर दिन बीते	पट मंजरी रागिनी सब दिन पूरवी सखी एक पहर दिन रहे सहावापुत्र पहर रात बीते समै	ललित रागिनी ब्राह्मी मुहूर्त प्रदीपकी सखी दिन रात कन्हरगौर पुत्र सारी रात समय	बिहाग रागिनी पहर रात बीते देवगिरी सखी दो पहर दिन बीते कल्यान पुत्र प्रथम पहर राती समय	बिलावल रा- गिनी पहर दिन बीच चैनी सखी दो घरी दिन रहे इमन कल्यान पुत्र पहर राती तक

अथ दीपकरागचक्रं ।

दीपक राग समय संध्या भीम पलासी सखी सबदिन नट राग सखा छ घरी रात रहे	देशी रागिनी डेरू पहर दिन चडे मलस्हान कान्हार सखी सर्द रात इमन के- दारा पुत्र पहर रातबीते	नट रागिनी दो पहर दिन बीते विश्वास सखी दो घरी राती रहे केदार कल्याण पुत्र पहर रातबीते	कामोद रागिनी सारे दिन अहिर सखी भोर जैत कल्याण पुत्र चार घटी रात बीते.	काफी रागिनी सारीरात चौरा सखी भोर कामोद कल्याण पुत्र चारी घटी रात बीते	केदार रागिनी पहर रात बीते भपावरी सखी पहर दिनचडे शाम कल्याण पुत्र पहर रात	कान्हारा रागिनी सारी रात पूरिया सखी धनाश्री पहर रात- बीते हमीर कल्याण पुत्र निशारी

अथ मेघराग चक्रं ।

मेघ राग सारे दिन राती नट मलार सखी दिन रात गौरा सखा दिनभर समय	शंकरा रा- गिनी दिन रात देशी टोडी सखी पहर दिन चडे समंतपुत्र दो पहर दिन बीते	सोरठ रा- गिनी दो पहर रात पूरिया असावरी सखी पहर दिन चडे नट पुत्र सारे दिन	गूजरी रा- गिनी प्रातश्याम वरारी सखी पहर दिन चडे अडाना पुत्र पहर रात बीते	भुपाली रागिनी चार घटी रात बीते पूरिया टोडी सखी दो पहर दिन चडे छाय.पुत्र प्रथम पहर रात	मलारी . रागिनी सारे दिन रात जैतश्री सखी सारे दिन सावंत पुत्र दो पहर रात बीते	देशकार रागिनी पहर दिन चडे सारथ हेली सखी सारी रात सिंधुरापुत्र पहर रात बीते